SEMESTER-VI

CORE PAPER-XIII - MODERN Indian Philosophy.

श्री अरविन्द Supermind (अतिमानस)

समसामयिक भारतीय दार्शनिक में अरविन्द रहस्यवादी एवं महायोगी दार्शनिक के रूप में हमारे समक्ष आते हैं। सहज, मौलिक एवं दार्शनिक विचारों की समाहित अभिव्यक्ति तथा रहस्यवादी दृष्टि श्री अरविन्द की महान कृति "The Life Divine" में सम्पूर्ण ढंग से समन्वित है। उनके आध्यात्म एवं दर्शन की चर्चा करते हुये [illegible] कहते हैं।

"Among the present day's Indian thinker's Sri Aurobindo is the most accomplised. His firm grasp of fundamentals of the true ardent philosophy his ardent love and his earnest attempt of the judment love for humanity and its future given to his writings adopts a comprehensivenes which are rarely to be met with."

Supermind का विचार अरविन्द की बहुत से योगदान में से एक प्रमुख विचार है। Supermind सच्चिदानन्द का एक पहलू है। Supermind सच्चिदानन्द का सृजनात्मक पक्ष है। क्योंकि सच्चिदानन्द अनन्त शक्ति, अनन्त सत्ता और अनन्त आनन्द है, स्वाभाविक यह सम्भव नहीं है कि उसकी सभी सृजनात्मक शक्तियाँ एक साथ अभिव्यक्त हो जाय। [सच्चिदानन्द में अनन्त सम्भावनाएँ हैं।] Supermind सच्चिदानन्द के इन ~~अव्यक्त~~ अनन्त शक्तियों को चुन लेता है और उनकी सृष्टि एवं सुस्पष्ट अभिव्यक्ति करता है। यदि सच्चिदानन्द की सभी अनन्त शक्तियाँ एक साथ अभिव्यक्त हो जाय तो सर्वत्र अव्यवस्था फैल जायगी और यह विश्व भी नहीं रह जायगा। अतिमानस के बिना सच्चिदानन्द की सम्भावनाओं की सृष्टि नहीं हो सकती। एक सत्ता की सृष्टि

तथा अभिव्यक्ति अतिमानस के द्वारा होती है। अतिमानस सच्चिदानन्द का ईश्वरीय पहलू है।

Supermind या ईश्वर, दिक् तथा काल में व्याप्त सच्चिदानन्द है। सच्चिदानन्द की अभिव्यक्ति सिर्फ सृजनात्मक अतिमानस के द्वारा ही सम्भव है इसलिए श्री अरविन्द का कहना है कि "यह सब को धारण करने वाला, सब को उत्पन्न करने वाला, सब की पूर्णकर्ता है। अतिमानस निश्चय ही अपने रूप में नहीं अपितु प्रभु एवं अपने जीवों के प्रतिरूपों के रूप में दिव्य सत्ता ही यह वह सत्य है जिसे हम ईश्वर कहते हैं।"

Supermind को श्री अरविन्द चित् शक्ति, ज्ञान संकल्प, सत्, चित् और सत् चित् कहते हैं। इसे चित् शक्ति या ज्ञान-संकल्प इसलिए कहते हैं कि यह स्वयं अन्तर्व्याप्त दिव्य चेतना है तथा इसमें विश्व की रचना एवं विकास करने की शक्ति है। यह सृजनात्मक चेतना है जिसमें ज्ञान तथा शक्ति का पृथक् अस्तित्व नहीं रहता है। Supermind ईश्वरीय नियम या ~~ऋत~~ ऋत-चित भी है जो विश्व की समस्त क्रियाओं को संचालित करता है। यह सृष्टि विकास, परिवर्तन, अभिव्यक्ति तथा रूपान्तर का सिद्धान्त है। प्रकृति में अवतरण, आरोहण तथा रूपान्तर चलता रहता है क्योंकि Super-mind चित् शक्ति इन्हें प्रबल रूप से संचालित और निर्देशित करता रहता है।

सच्चिदानन्द के तीनों पक्ष ?

सत्, चित् शक्ति और आनन्द विश्वातीत हैं। अतिमानस इसका चौथा (चतुर्थ) पहलू है जो बहिर्गत भी है। सच्चिदानन्द विश्वातीत तथा अन्तर्व्याप्त सत्ता दोनों है। अतिमानस सृष्टि कर्ता (मुक्तिदाता, रक्षक और अनुभवातीत)

चित् - शक्ति सत् और आनन्द की अभिव्यक्ति प्रदान करता है।

श्री अरविन्द के अनुसार Supermind सच्चिदानन्द से भिन्न नहीं है। सच्चिदानन्द विश्वातीत और अन्तर्व्याप्त सत्ता एवं शक्ति दोनों है। यह निरपेक्ष सत्ता और ईश्वर का संयुक्त रूप है। सच्चिदानन्द का रचनात्मक पक्ष उतना ही मौलिक है, जितना उसका विश्वातीत पहलू है। अतिमानस सच्चिदानन्द की आत्म शक्ति नहीं है।

श्री अरविन्द अतिमानस को सच्चिदानन्द तथा जगत के बीच मध्यस्थ तत्व मानते हैं। जगत की रचना तथा श्रेष्ठ आध्यात्मिक तत्वों की अभिव्यक्ति अतिमानस के ऊपर ही निर्भर करती है। अतिमानस विश्व विकास को निर्देशित करता है। यह विश्वातीत ब्रह्म और जगत का मध्यस्थ है। सच्चिदानन्द और जगत दो चरम तत्व हैं, जिसके बीच अतिमानस मध्यस्थ तत्व है। अतिमानस के द्वारा ही, सच्चिदानन्द का रूप विश्व में प्रकाशित होता है। अतिमानस ~~सच्चिदानन्द~~ सच्चिदानन्द का अन्तर्व्याप्त चित् - शक्ति है। श्री अरविन्द कहते हैं - "निःसन्देह, स्वयं सच्चिदानन्द ही यह तत्व है किन्तु यह वह सच्चिदानन्द नहीं जो अपनी शुद्ध अवस्था, अर्थात् अपरिवर्तनशील चेतना में स्थित है। वरन वह है जो उस स्थिति से चलकर शक्ति उसी को आधार बनाकर उसमें ऐसी गति लाता है। जो उसकी ऊर्जा का रूप और विश्व सृष्टि का उपकरण है।

अरविन्द के अनुसार Supermind के तीन अवस्थाओं से गुजरता है - पहली अवस्था जिसे इन्होंने सर्वव्यापी चेतना (अवधारणा चेतना) कहा है यह वह अवस्था है जब

यह सच्चिदानन्द के भाव स्वतः स्थापित कर निज रूप काल में सच्चिदानन्द का विस्तृत रूप होता है। अतिमानस की दूसरी स्थिति बोधगम्य चेतना की अवस्था है जिसमें सृष्टि की सम्भावनायें है। यह हिरण्यगर्भ के समान सम्भावना या विश्व बीज है। जिससे विश्व उत्पन्न होता है। सच्चिदानन्द को वह दूसरे पक्ष से विश्व सृष्टि की सम्भावना तथा सच्चिदानन्द की क्षमताओं को अभिव्यक्ति निहित है। दूसरी स्थिति को प्रज्ञान चेतना भी कहते है। Supermind की तीसरी स्थिति चेतना जो मानव जीवन तथा जड़ से विश्व की रचना करता है। अतिमानस की तीसरी स्थिति अनेकता तथा जगत की सृष्टि में निहित है। प्रसिद्ध चेतना इन सभी शाश्वत क्षमताओं को पर्याप्त रूप प्रदान करती है जो Supermind के प्रथम और द्वितीय अवस्था में अप्रकाशित रहती।

अतिमानस की आत्मिक स्थितियाँ विश्व और विभिन्न सत्तायें पूर्ण स्वतः में समाहित रहती है। अतिमानस सच्चिदानन्द की सम्भावनाओं का प्रत्यक्ष ज्ञान रखता है। अतिमानस की प्रथम स्थिति में सच्चिदानन्द की सम्भावनायें तथा शक्तियाँ रहती है सभी प्रच्छन्न शक्तियाँ इसमें समाविष्ट रहती है। वह सभी सृष्टि तथा अभिव्यक्ति का स्रोत है। अतिमानस का कार्य इन शक्तियों को मूर्त तथा रूप देना तथा अभिव्यक्त करना है।

दूसरी स्थिति में अतिमानस अमूर्त सम्भावना रूप में सत्ताओं की सृष्टि करता है। प्रज्ञान अतिमानस से सम्भावनायें वर्तमान रहती है जो विश्व की रचना

में निमज्जित होती है। सत्ताओं का समूह, प्रधान अतिमानस की चेतना में पायी जाती है। प्रधान अतिमानस में हम व्यष्टि का आरम्भ पाते हैं। आत्माओं की अनेकता इस अवस्था में निमज्जित हो जाती है। किन्तु वे संकल्प की अवस्था में विद्यमान ही रहते हैं।

अतिमानस की तीसरी स्थिति (प्रक्षेपक अतिमानस) विभिन्न तत्वों के पृथक तथा स्वतंत्र रूप में विकसित करती है। प्रक्षेपक चेतना (रूपों) वस्तुओं तथा विश्व की रचना करती है।

श्री अरविन्द के अतिमानस की त्रिविध अवस्था का वर्णन इस प्रकार करते हैं कि हम देखते हैं कि सर्वज्ञ अतिमानस के तत्व में उसकी जगत संस्थापिका चेतना की तीन सामान्य स्थितियाँ होती हैं। प्रथम स्थिति वस्तुओं के अविच्छेद्य एकत्व को आधार देती है दूसरी इस एकत्व को इस प्रकार परिवर्तित करती है कि एक में बहु और बहु में एक की अभिव्यक्ति को अवलंब प्राप्त होता है तीसरी उसे इस भाँति और परिवर्तित करती है कि नानाविध व्यष्टि के विकास क्रम को अवलंब प्राप्त होता है। यह व्यष्टि ही अविद्या की क्रिया द्वारा निम्नतर स्तर पर हमारे अन्दर पृथक अहं का भ्रम बन जाती है।

इस प्रकार अतिमानस की इन अवस्थाओं में तीन प्रकार की क्रियाएँ होती हैं—

(1) प्रथम अवस्था में हम पाते हैं कि अतिमानस काल तथा देश में सच्चिदानन्द है यह सच्चिदानन्द का अन्तःस्थ पक्ष है।

(2) Supermind की दूसरी अवस्था

अनेकता तथा विविधता की अभिव्यक्ति होता है लेकिन वे संयुक्त रूप में रहती हैं। चित्-शक्ति अपने को आत्माओं की अनेकता तथा प्रकृति में पृथक पृथक सत्ताओं का विभाजन करती है। पुरुष तथा प्रकृति / आत्माएँ तथा भौतिक सत्ताएँ इसमें अलग-अलग रूप में अलग रहती हैं किन्तु इन सबों में आन्तरिक एकता रहती है। 'अनेक' 'एक' में संयुक्त होता है तथा 'एक' 'अनेक' में अभिव्यक्त होता है।

Unity is Diving and Diving is Unity.

(3) अतिमानस की तीसरी अवस्था में आत्मरूपों की अनेकता की पृथक सत्ता रहती है। वे प्रकृति में व्यक्तिगत तथा पृथक रूप में निवास करते हैं। किन्तु आत्माओं और प्रकृति की सत्ताओं से परे अतिमानस सदैव ऐक्य में विद्यमान रहता है। अतः Supermind की तीन स्थितियाँ उसके तीन प्रकार की क्रियाओं का द्योतक हैं।

श्री अरविन्द कहते हैं — "विभाजन के तत्व इसी भाँति अतिमानस में आते। पहले, इस एक की अनन्त ने अपने को पारलौकिक काल और देश के विस्तारण में अनुप्रेरित किया फिर इस आत्म-चेतन विस्तरण में इस एक की सर्वव्यापिता ने अपने-आपको विश्वात्मा के बहुत्व में, सांख्य के बहु पुरुषों के अनुरूप किया। तीसरे, आत्मा रूपों के बहुत्व में अपने आपको विस्तृत एकता के पृथक्कृत निवास में अपने को रूपान्तरित किया।"